प्रवाह
निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

सपनों से सफलता तक पहुंचने का रास्ता मौजूद है। आपके पास इसे खोजने और इस पर जाने का साहस होना चाहिए...
कल्पना चावला, *महिला अंतरिक्ष यात्री*

ओडिशा की पांचवीं बार कमान संभालने वाले नवीन पटनायक को प्राकृतिक आपदा से हुए नुकसान की भरपाई के लिए नए निवेश जुटाने होंगे, तो पड़ोसी राज्य आंध्र के युवा मुख्यमंत्री जगनमोहन रेड्डी को जनाकांक्षाओं पर खरा उतरने के लिए नई सोच लानी होगी।

नवीन और जगन

आंध्र प्रदेश और ओडिशा के विधानसभा चुनावों के बाद दो ऐसे नेताओं ने इन राज्यों की कमान संभाली है, जिनके दलों पर आज केंद्र की एनडीए सरकार निर्भर नहीं है, लेकिन उनके रिश्ते प्रधानमंत्री मोदी के साथ असहज भी नहीं हैं। नवीन पटनायक ने ओडिशा के मुख्यमंत्री के रूप में पांचवीं बार कमान संभाली है, वहीं जगनमोहन रेड्डी आंध्र प्रदेश के युवा मुख्यमंत्री के रूप में शुरुआत कर रहे हैं। बीते दो दशकों में केंद्र की राजनीति से एक सुरक्षित दूरी रखते हुए पटनायक ने अपनी पार्टी के भीतर जहां असंतुष्टों को किनारे लगाया, वहीं आपदा प्रबंधन के साथ ही खासतौर से कृषि के क्षेत्र में 'कालिया' जैसी कल्याणकारी योजना के जरिये मतदाताओं में पैठ मजबूत की है। लेकिन नई पारी में उन्हें राज्य में नए निवेश के बारे में भी सोचना होगा, क्योंकि हाल ही में आए फैनी तूफान ने ओडिशा में आधारभूत संरचना को भारी नुकसान पहुंचाया है। ऐसे में भारी बहुमत के साथ दोबारा सत्ता में आए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ उनका सहज रिश्ता काम आ सकता है। वहीं पड़ोसी राज्य आंध्र प्रदेश में वाईएसआर कांग्रेस के नेता जगनमोहन रेड्डी ने मुख्यमंत्री के रूप में कमान संभालकर जता दिया है कि एक दशक पहले उनके पिता राजशेखर रेड्डी की हादसे में हुई मौत के बाद वह कांग्रेस में उनके स्वाभाविक उत्तराधिकारी थे, जिसे समझने में देश की सबसे पुरानी पार्टी से चूक हुई। विधानसभा के साथ ही लोकसभा चुनाव में अच्छा प्रदर्शन करने के बावजूद जगन ने खुद स्पष्ट कर दिया है कि मोदी सरकार को उनके समर्थन की जरूरत नहीं है। दरअसल इसका असर उनके प्रदर्शन पर पड़ सकता है, क्योंकि पिछले वर्षों में उन्होंने आंध्र प्रदेश को विशेष दर्जा देने की मांग पुरजोर तरीके से उठाई थी। चंद्रबाबू नायडू सरकार पर भ्रष्टाचार के आरोप तो थे ही, लेकिन अविभाजित आंध्र प्रदेश में राजस्व का सबसे बड़ा जरिया हैदराबाद के तेलंगाना के हिस्से में चले जाने का

खामियाजा भी उन्हें भुगतना पड़ा। नई राजधानी अमरावती को लेकर भी पूर्व मुख्यमंत्री नायडु काफी संजीदा थे, मगर वह निवेश जुटाने में नाकाम रहे। वहीं राज्य का रायलसीमा वाला क्षेत्र कृषि संकट से भी जूझ रहा है। राज्य विधानसभा चुनाव में 175 में से 151 सीटें और लोकसभा की 25 में से 23 सीटें जीतने के साथ ही जगनमोहन रेड्डी से राज्य के लोगों की उम्मीदें भी बढ़ गई हैं; जाहिर है, उन्हें नई सोच और नए कार्यक्रमों के साथ ही राजस्व के नए स्रोत भी जुटाने होंगे।

मोदी सरकार 2.0

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि इस मंत्रिमंडल में सत्ता के असली सूत्रधार नरेंद्र मोदी और अमित शाह ही हैं। पार्टी, राजनीति और चुनावी प्रक्रिया ही नहीं, अब सरकारी कार्यवाही भी इन्हीं दोनों के इशारे पर चलेगी।

सत्रहवीं लोकसभा के चुनाव के बाद नई सरकार के गठन की प्रक्रिया अब पूर्ण हो चुकी है। बृहस्पतिवार शाम राष्ट्रपति भवन के प्रांगण में एक शानदार राष्ट्रीय समारोह में प्रधानमंत्री मोदी समेत 58 लोगों ने मंत्री पद की शपथ ली। इस भव्य समारोह में करीब 8,000 लोग सम्मिलित हुए। आम तौर पर औपचारिक राष्ट्रीय समारोह या विदेशी राष्ट्राध्यक्षों/शासनाध्यक्षों के लिए राष्ट्रपति भवन का इस्तेमाल किया जाता था, लेकिन उसके मुख्य परिसर में इतने आमंत्रित मेहमान और भाजपा के कार्यकर्ता शपथ समारोह के लिए जुटे, यह अपने आप में एक अनूठी बात थी। शपथ समारोह के कुछ समय पहले तक भी किसी को यह भनक नहीं थी कि मंत्रिमंडल की आधिकारिक सूची में किस-किस को शामिल किया जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, नए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, नए गृह मंत्री अमित शाह और नई वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण इस सरकार के मुख्य स्तंभ हैं। ये सभी लोग पार्टी में या पिछली सरकार में भी महत्वपूर्ण कार्यभार संभाल चुके हैं। नए मंत्रिमंडल का चेहरा पुराने मंत्रिमंडल से बहुत अलग तो नहीं, लेकिन कुछ-कुछ बदला हुआ-सा लग रहा है।

मनीषा प्रियम
राजनीतिक विश्लेषक

खास बात यह है कि इस बार प्रधानमंत्री मोदी ने एक पूर्व नौकरशाह एस जयशंकर को विदेश मंत्री के रूप में मंत्रिमंडल में शामिल किया है, जो नौकरशाहों को शामिल करने की उनकी पूर्व कार्यशैली की निरंतरता का परिचायक है। जयशंकर पिछली सरकार में विदेश सचिव रहे हैं। उनके आने से मोदी की विदेश नीति को महत्वपूर्ण तकनीकी सहयोग मिलेगा। आज के वैश्विक वातावरण में विदेश नीति एक जटिल मसला है, जिसमें भारत को एक तरफ तो चीन के बढ़ते वर्चस्व का सामना करना है, दूसरी तरफ पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादी गतिविधियों पर भी अंकुश लगाना है। पाकिस्तान की बिगड़ती आर्थिक स्थिति के कारण वहां की भूमि पर फलने-फूलने वाले आतंकवाद में इजाफा हो सकता है।

इसके अलावा, एक अहम मुद्दा बांग्लादेशी घुसपैठियों का है, इस पर

नवनिर्वाचित गृह मंत्री अमित शाह के बयान से स्पष्ट है, कि वह विदेशी घुसपैठियों के मामले पर कोई ढिलाई नहीं बरतेंगे। यहीं नहीं, वह फिर से विवादास्पद नागरिकता संशोधन बिल भी ला सकते है। नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटीजन्स को राष्ट्रीय स्तर पर लागू किए जाने की बात वह कर ही चुके हैं। ऐसे में कई लोगों को यह आशंका है कि बेशक वह पहले गृह मंत्री सरदार पटेल की तरह सख्त होंगे, लेकिन कहीं इससे सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास के मोदी मंत्र में कमी न आ जाए। जहां तक अयोध्या में भव्य राम मंदिर बनाए जाने की बात है, तो अब इस पर किसी को शक नहीं कि राम मंदिर बन जाएगा।

प्रधानमंत्री मोदी के बाद सबसे कद्दावर और जमीनी राजनीति से जुड़े नेता राजनाथ सिंह का मंत्रालय बदल दिया गया है, जो अमित शाह की तरह पार्टी अध्यक्ष रह चुके हैं। उनके मंत्रिमंडल फेरबदल पर कई तरह के कयास लगाए जा सकते हैं, लेकिन इसका निष्कर्ष अब यही है कि यह सरकार मोदी 2.0 है। जहां तक वित्त मंत्रालय जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालय की बात है, तो इसकी जिम्मेदारी निर्मला सीतारमण को सौंपी गई है। जाहिर है, निर्मला सीतारमण के अनुभव और उनकी कार्यशैली उनके पक्ष में गई है। अपने कठिन परिश्रम से उन्होंने कैबिनेट में अपनी महत्वपूर्ण जगह बनाई है।

नए मंत्रिमंडल में कैबिनेट कमिटी ऑन सिक्योरिटी (जो गंभीर संकट की स्थिति में रणनीति बनाती है) में, जिसकी अगुआई प्रधानमंत्री स्वयं करते हैं, दो ऐसे मंत्री हैं, जो पहले कभी केंद्र में मंत्री नहीं रहे। लेकिन अमित शाह गुजरात के गृह मंत्री रह चुके हैं। जबकि एस जयशंकर विदेश सचिव रह चुके हैं, इसलिए एक आला अफसर की हैसियत से वह विदेश नीति और सुरक्षा के मामलों को भलीभांति समझते हैं। इसलिए चेहरों में नयापन के बावजूद भी दोनों को अनुभव की कमी नहीं है।

नितिन गडकरी, रविशंकर प्रसाद जैसे मंत्री पहले के मंत्रालयों की ही जिम्मेदारी संभालेंगे। लगता है, जिस तरह जनता ने प्रधानमंत्री को अपने अधूरे वादों को पूरा करने के लिए एक और मौका दिया है, उसी तरह प्रधानमंत्री ने भी अपने कुछ मंत्रियों को अपना काम पूरा करने के लिए एक और मौका दिया है। राहुल गांधी को अमेठी में हराने वाली स्मृति ईरानी को इस बार महिला एवं बाल विकास मंत्रालय दिया गया है, जो पहले मेनका गांधी के पास था। मेनका गांधी इस मंत्रिमंडल का हिस्सा नहीं हैं।

गौरतलब बात यह भी है कि इस कैबिनेट में कई अनुभवी पूर्व मुख्यमंत्री हैं, जैसे कि झारखंड के अर्जुन मुंडा और उत्तराखंड के रमेश पोखरियाल निशंक, जिनके पास कैबिनेट चलाने का महत्वपूर्ण प्रशासनिक अनुभव है। जहां तक क्षेत्रीय संतुलन की बात है, तो यह कहना उचित होगा कि दक्षिण की तुलना में उत्तर भारत को ज्यादा तवज्जो दी गई है। आंध्र, केरल और तमिलनाडु से किसी भी सांसद को मंत्री नहीं बनाया गया है, टोकन के तौर पर वी मुरलीधरन, जो कि फिलहाल केरल भाजपा के अध्यक्ष हैं और संगठन में लंबा समय बिता चुके हैं, को मंत्री पद की शपथ दिलाई गई है। कर्नाटक से चार मंत्री बनाए गए हैं, जिनमें प्रमुख हैं सदानंद गौड़ा। पूर्वोत्तर से किरण रिजिजू को भी मंत्रिमंडल में जगह मिली है।

इस मंत्रिमंडल में कुल छह महिलाएं हैं, जिसमें बंगाल से भी एक हैं। महिलाओं की भागीदारी कम है, पर दो महत्वपूर्ण मंत्रालयों की जिम्मेदारी महिलाओं को दी गई है। गठबंधन के साथियों में लोजपा से रामविलास पासवान, शिरोमणि अकाली दल से हरसिमरत कौर बादल और शिवसेना से अरविंद सावंत को मंत्रिमंडल में जगह मिली है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण साथी जदयू सरकार से बाहर है। सबसे ज्यादा सुर्खियों में रहे बालासोर के सांसद प्रताप चंद्र सारंगी, जो सादगी भरा जीवन जीने के लिए जाने जाते हैं। इन्हें शामिल करके प्रधानमंत्री ने सादगी, निष्ठा और गरीब हितैषी छवि दर्शाने की कोशिश की है। अरुण जेटली और सुषमा स्वराज ने शायद अपने नाजुक स्वास्थ्य की वजह से मंत्रिमंडल से बाहर रहना पसंद किया। सुरेश प्रभु, जयंत सिन्हा, विजय गोयल, राज्यवर्धन सिंह राठौर, मेनका गांधी जैसे महत्वपूर्ण नाम मंत्रिमंडल में अपनी जगह नहीं बना सके। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि इस मंत्रिमंडल में सत्ता के असली सूत्रधार अब नरेंद्र मोदी और अमित शाह ही हैं। पार्टी, राजनीति और चुनावी प्रक्रिया ही नहीं, अब सरकारी कार्यवाही भी इन्हीं दोनों के इशारे पर चलेगी। आने वाले दिनों में देखना यह है कि दक्षिण के राज्यों में भाजपा अपनी पैठ कैसे बना पाएगी।

25वीं बार एवरेस्ट फतह करने का है लक्ष्य

अपनी कहानी

>> कामी रीता शेरपा

नेपाल के शेरपा दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं। कई विदेशी हमें जानते हैं, लेकिन हमारी सरकार शेरपाओं के बारे में परवाह नहीं करती है। एवरेस्ट के रास्ते पर दरारें गहरी हैं और ढलान अप्रत्याशित हैं।

***मैंने** हमेशा इतिहास बनाने की कोशिश की है ताकि मेरे देश और समुदाय को इस पर गर्व हो। बीते 25 वर्षों में 24 बार माउंट एवरेस्ट फतह कर चुका हूं। मैं अब भी मजबूत हूं और 25वीं बार सागरमाथा चोटी को फतह करना चाहता हूं। मैं नेपाल में सोलुखुम्बु जिले के थमे गांव का रहने वाला हूं। यह वही गांव है, जहां महान पर्वतारोही व प्रथम एवरेस्ट विजेता तेनजिंग का जन्म हुआ। अभी मैं एक अमेरिकी कंपनी के लिए गाइड का काम करता हूं। यह पर्वतारोहण यात्राओं का आयोजन करती है। मैं अधिकांश चोटियों, जिनमें कंचनजंगा, चो-ओयू, ल्होत्से और अन्नपूर्णा शामिल हैं, पर चढ़ाई कर चुका हूं।*

कठिनाइयों में बीता बचपन

सोलखुम्भू घाटी के हर शेरपा बच्चे की तरह मेरा बचपन भी कठिनाइयों से भरा हुआ था। हम एक कमरे के घर में अपने बड़े परिवार के साथ रहते थे। मेरे परिवार का पुश्तैनी पेशा भेड़ पालन था। 1950 में जब नेपाल सरकार ने एवरेस्ट आरोहण के लिए विदेशियों को अनुमति देने की शुरुआत की तो हमारे लिए घर में ही पर्वतारोहण के जरिये रोजगार पाना आसान हो गया। मेरे पिता भी एवरेस्ट के आरंभिक शेरपा गाइडों में से एक बन गए। मुझे बचपन में पढ़ाई के लिए एक मठ में भेजा गया, लेकिन वहां ज्यादा दिन तक रह नहीं सका और वापस आ गया। फिर एक एवरेस्ट अभियान में सामान ढोने का काम मिल गया। कुछ ही वर्ष बाद मैं एवरेस्ट बेस कैंप में सहायक रसोइए के रूप में कार्यरत हो गया। अब तक पर्वतारोही मुझे एक अच्छे शेरपा के तौर पर भी पहचानने लगे थे।

शुरू हुआ अभियान

वर्ष 1994 में 25 वर्ष की उम्र में मुझे हाई एल्टीट्यूट वर्कर (ऊंचाई पर जाने के अनुकूल कामगार) के रूप में इस अभियान में शामिल होने का मौका मिला। मैंने इसका फायदा उठाया और एवरेस्ट शिखर पर पहली बार पहुंचने का लक्ष्य हासिल किया। 1995 में मुझे दोबारा एवरेस्ट जाने का मौका मिला, लेकिन 8,500 मीटर की ऊंचाई पर पहुंचने के बावजूद अपने एक अस्वस्थ साथी की जान बचाने के लिए वहीं से वापस लौटना पड़ा। 1997 में मैं एक बार फिर एवरेस्ट के शिखर पर था पर इस बार हाई एल्टीट्यूट वर्कर नहीं, बल्कि एक पर्वतारोही के रूप में। इसके बाद यह सिलसिला लगातार आगे बढ़ता गया। पिछले महीने एक हफ्ते में दूसरी बार दुनिया की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई कर मैंने अपना ही रिकॉर्ड तोड़ा। ऐसा करने वाला मैं दुनिया का पहला पर्वतारोही बन गया हूं।

सहयोग मिला नहीं, मुश्किलें बड़ी

नेपाल के शेरपा दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं। कई विदेशी हमें जानते हैं, लेकिन हमारी सरकार शेरपाओं के बारे में परवाह नहीं करती है। एवरेस्ट के रास्ते पर दरारें गहरी हैं और ढलान अप्रत्याशित हैं। मेरे परिवार और दोस्तों ने मुझ पर तरह-तरह से दबाव डाला कि पर्वतारोहण छोड़ आराम की जिंदगी बिताऊं। पर मुझे ऐसा करते रहना पड़ा, क्योंकि मैं कुछ और नहीं जानता। यह ठीक है कि मैं एवरेस्ट को बहुत अच्छी तरह जान गया हूं क्योंकि मैं कई बार एवरेस्ट आरोहण कर चुका हूं। पर किसी बार भी ऐसा हो सकता है कि मैं वापस न लौट पाऊं। मैं अपने दोनों बेटों को बेहतर शिक्षा दिलाने का प्रयास कर रहा हूं ताकि आजीविका के लिए उन्हें ऐसा खतरनाक काम न करना पड़े।

-24 बार एवरेस्ट फतह कर चुके शेरपा के विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

फैक्ट फाइल

रेअर अर्थ

>> रेअर अर्थ तत्व

18 अगस्त 1950 को इंडियन रेअर अर्थ्स लिमिटेड की स्थापना की गई।

चीन और अमेरिका के बीच जारी व्यापार युद्ध में रेयर अर्थ (विरल मृदा) तत्वों को नया हथियार बनाने के संकेत मिल रहे हैं। मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक अमेरिका इन धातुओं की आपूर्ति पर प्रतिबंध लगाने पर विचार कर रहा है। रेयर अर्थ धातुओं का इस्तेमाल स्मार्टफोन और टेलीविजन से लेकर कैमरा और बल्ब बनाने में होता है। विरल मृदा तत्व धातुओं के उन क्षारक ऑक्साइडों को कहते हैं जिनके तत्वों के आवर्त सारणी के तृतीय समूह में आते हैं। इनमें 15 तत्व हैं, जिनकी परमाणु संख्या 57 और 71 के बीच है। ये ऐसे खनिजों में पाए जाते हैं, जो कहीं-कहीं ही और अल्प मात्रा में पाए जाते हैं। ऐसे खनिज स्कैंडिनेविया, साइबेरिया, ग्रीनलैंड, ब्राजील, भारत, श्रीलंका, कैरोलिना, फ्लोरिडा, आइडाहो व अमेरिका आदि देशों में मिलते हैं। खनिजों से इनका पृथक्करण कठिन, परिश्रम साध्य और व्ययसाध्य होता है। इस कारण से ये बहुत महंगे बिकते हैं। इनका अध्ययन विस्तार से न हो पाने के यही कारण हैं। वर्ष 1887 में ब्रिटिश रसायनशास्त्री सर विलियम क्रूक्स इस परिणाम पर पहुंचे थे कि विरल मृदा के तत्व वस्तुत: कई तत्वों के मिश्रण हैं। ए 18 अगस्त, 1950 को भारत सरकार और तत्कालीन त्रावणकोर, कोचीन के संयुक्त स्वामित्व वाली एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के रूप में इंडियन रेअर अर्थ्स लिमिटेड को स्थापित किया गया। इसका मूल उद्देश्य मोनाजाइट की प्रोसेसिंग के माध्यम से वाणिज्यिक स्तर प्राप्त करना और अपने पहले यूनिट केरल में थोरियम प्राप्त करना था।

थियानमेन चौक का सच

एक ताजा दस्तावेज के मुताबिक, उस घटना की वजह दरअसल दो बड़े नेताओं की आपसी प्रतिद्वंद्विता थी।

न्यूयॉर्क टाइम्स के लिए क्रिस बकले

एक के बाद एक चीनी नेता खड़े हुए और उन्होंने उन आंदोलनकारी छात्रों की तीखी आलोचना की, जिन्होंने थियानमेन चौक पर कब्जा कर लिया था। मंच पर उपस्थित नेताओं ने आंदोलनकारियों के प्रति नरमी बरतने के लिए कम्युनिस्ट पार्टी के नेता जियांग जेमिन की भी निंदा की। तीन और चार जून, 1989 को लोकतंत्र के पक्ष में हुए छात्र आंदोलन को कुचलने से संबंधित कम्युनिस्ट नेताओं की गोपनीय चिट्ठियां और बयान शुक्रवार को हांगकांग में सार्वजनिक किए गए, जिसमें यही सब कहा गया है।

दरअसल अप्रैल, 1989 में रिफॉर्मिस्ट पार्टी के उपेक्षित नेता हू याओबांग की मौत पर क्षुब्ध छात्रों ने थियानमेन चौक पर कब्जा कर लिया था। वे एक पारदर्शी सरकार और अपने लिए ज्यादा लोकतांत्रिक अधिकार चाहते थे। झाओ जियांग और उनके समर्थक आंदोलनकारियों के साथ बातचीत कर समाधान निकालना चाहते थे। लेकिन कट्टरपंथी हावी हो गए और उन्होंने झाओ को ही बाहर का रास्ता दिखा दिया। तीन जून, 1989 की रात को सैनिकों ने बीजिंग में सैकड़ों, बल्कि हजारों आंदोलनकारियों को गोलियां

मार दीं। चीन के दूसरे शहरों में भी सैनिकों और छात्रों के बीच खूनी झड़प हुई।

उस घटना पर *लास्ट सीक्रेट : द फाइनल डॉक्यूमेंट्स फ्रॉम द जून फोर्थ क्रैकडाउन* नाम से प्रकाशित इस दस्तावेज में एक अनुभवी और बेहद गुस्सैल कम्युनिस्ट नेता वांग जेन बार-बार यह कहते पाए गए, 'जिन्हें खत्म कर देना चाहिए, उन्हें खत्म कर दो। जिनके खिलाफ मुकदमा चलाया जाना चाहिए, उनके खिलाफ मुकदमा चलाओ।' अभी प्रकाशित ये दस्तावेज चीन की कम्युनिस्ट सरकार की दमनकारी और गोपनीय नीति के बारे में ही बताते हैं। सिर्फ यही नहीं कि चीन की यह गोपनीय कार्य संस्कृति राष्ट्रपति शी जिनपिंग के कार्यकाल में भी बरकरार है, जब वह अमेरिका के साथ व्यापार युद्ध में उलझा हुआ है, बल्कि उसकी इस गोपनीय कार्य संस्कृति के बारे में दुनिया को भी बखूबी पता है। 'वर्ष 1989 से ही चीन, और ज्यादा स्पष्ट रूप से कहें, तो चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने बारे में यह धारणा फैला रखी है कि वह दुश्मनों से घिरी हुई है,' ज्यां पीयरे सेबस्टेन कहते हैं, जो हांगकांग बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी में राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर और *चाइना टुमॉरो : डेमोक्रेसी ऑर डिक्टेटरशिप* के लेखक हैं।

1989 में हुई उस उथल-पुथल का चीन में अब कोई जिक्र नहीं होता। सेंसरशिप और सुरक्षा संबंधित नियंत्रण ने थियानमेन चौक से संबंधित स्मृतियों पर कठोर अंकुश लगा रखा है। लेकिन उस घटना का चीन की राजनीति पर व्यापक असर पड़ा है। कुल 209 पृष्ठों का यह दस्तावेज जून, 1989 में शीर्ष स्तर पर हुई बैठकों पर आधारित है, जिनमें सभी नेता ताकत के बल पर छात्र आंदोलन को दबाने पर सहमत थे। हर सरकारी अधिकारी बुजुर्ग नेता देंग श्याओ पिंग के साथ थे, जिन्होंने सशस्त्र कार्रवाई का हुक्म दिया था। जबकि उदारवादी महासचिव झाओ की सबने आलोचना की, क्योंकि उन्होंने बातचीत के जरिये छात्र आंदोलन का समाधान निकालने का सुझाव दिया था।

इस हफ्ते के शब्द

बेंजामिन नेतन्याहू

इस्राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू नामित होने के बाद भी गठबंधन सरकार बनाने में नाकाम रहे, अब 17 सितंबर को फिर से देश में आम चुनाव होंगे।

स्पेलब्रिटी (SPELLEBRITY)

स्पेलिंग बी प्रतियोगिता के दौरान चर्चित रहे इस शब्द का अर्थ होता है इस प्रतियोगिता को जीतकर हस्ती बने बच्चे।

गूगल पर जुर्माना

65,000 करोड़

का जुर्माना डाटा प्राइवेसी उल्लंघन सहित अन्य मामलों के लिए 2017 से 2019 तक ईयू लगा चुका है।

सूत्र

>> सोफिया अमर्सो

अकेले शुरुआत करके भी पाई जा सकती है सफलता

मेरा जन्म कैलिफोर्निया के सैन डियागो में हुआ। किशोरावस्था में अवसाद और अन्य बीमारियों के उपचार के बाद मैंने स्कूल छोड़ दिया और घर पर ही पढ़ाई करने लगी। किशोरावस्था में ही मैं एक सबवे रेस्तरां में काम करने लगी और उसके बाद मैंने कई तरह के अजीबोगरीब काम किए, जिसमें किताब और रिकॉर्ड की दुकान पर काम करना भी शामिल था। फिर मेरे माता-पिता का तलाक हो गया और मैं कैलिफोर्निया के सैक्रामेंटो चली गई। युवावस्था में मैंने खानाबदोश और अव्यवस्थित जीवन जिया। फिर मैं सेन फ्रांसिस्को चली गई, जहां कम्युनिटी कॉलेज में मैंने एकेडमी ऑफ आर्ट यूनिवर्सिटी की लॉबी में छात्रों का परिचय पत्र जांचने का काम किया। सिक्योरिटी गार्ड की नौकरी करते हुए ही मैंने ऑनलाइन ईबे स्टोर खोला, जिसे मैंने नैस्टी गल नाम दिया। उसके जरिये मैं पुराने कपड़े और अन्य वस्तुएं बेचती थी। पहली वस्तु जो मैंने बेची, वह किताब थी, जो मैंने अपनी किशोरावस्था में चुराई थी। ऑनलाइन ईबे स्टोर का सारा काम मैं अकेले करती थी। नैस्टी गल ने जल्द ही महिलाओं का ध्यान आकर्षित किया और 2008 में 2,23,000 डॉलर से शुरू हुआ

यह कारोबार 2011 में 23 लाख डॉलर पर पहुंच गया। अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं में मेरी सफलता की कहानियां सुर्खियों में छपीं। वर्ष 2014 में मैंने अपने अनुभवों को एक किताब की शक्ल दी, जो गर्लबॉस के नाम से प्रकाशित हुई और बेस्ट सेलर रही। फिर मैंने नैस्टी गल के सीईओ का पद छोड़ दिया। बाद में नैस्टी गल दिवालिया हो गई, जिसे बूहू ग्रुप ने खरीद लिया। नैस्टी गल की यह स्थिति आर्थिक संकटों और कानूनी लड़ाई में फंसने के कारण हुई, लेकिन फिर भी मैंने अपना धैर्य नहीं खोया। 2017 में मैंने *गर्लबॉस* मीडिया हाउस की स्थापना की, जो महिला पाठकों एवं दर्शकों के लिए संपादकीय सामग्री, वीडियो, आदि तैयार करता है। अब मैं युवा उद्यमियों को व्यवसाय से संबंधी सलाह देती हूं। मेरा मानना है कि कार्यस्थल पर हर तरह के लोग होते हैं, इसलिए छोटी-छोटी मुश्किलों को अपने ऊपर हावी नहीं होने देना चाहिए। सवाल करना, नई जानकारियां हासिल करना और अपनी बात रखना जरूरी है, इससे दूसरों को लगेगा कि आपमें सीखने की क्षमता है। कार्यस्थल की राजनीति में न फंसकर अपने काम पर ध्यान केंद्रित करना ही सफलता के लिए जरूरी है।

अनजान लोगों से मिलना, उनके अनुभवों से सीखना बेशक शुरू में कुछ अटपटा लगता है, लेकिन बाद में वह मददगार साबित होता है।